

प्रत्यय- प्रति + अय  
 साथ में जुड़ने वाला। चलने वाला  
 पर बाद में

वे शब्दांश जो किसी शब्द के अन्त में जुड़कर  
 उसके अर्थ को प्रभावित कर देते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं -

जैसे - अड़ना + इयत् = अड़ियत्, घूमना + अक्कड़ = घुमक्कड़

चाचा + ररा = चचेरा, जानी (ननिह) + आत् = ननिहात्

## प्रत्यय की विशेषताएँ -

- ① → ये शब्दांश होते हैं
- ② → इनका कोई स्वतंत्र अर्थ नहीं होता
- ③ → ये जिस शब्द के साथ जुड़ते हैं उसके अर्थ को प्रभावित करते हैं
- ④ → इनमें संधि नियम लागू नहीं होता है।

## प्रत्यय के भेद — दो भेद

### ① कृत/कृदन्त प्रत्यय

- (i) → कर्तृवाचक कृदन्त प्रत्यय
- (ii) → कर्मवाचक " "
- (iii) → करणवाचक " "
- (iv) → भाववाचक " "
- (v) → क्रियाबोधक " "

### ② लङ्घित प्रत्यय

- (i) → कर्तृवाचक लङ्घित प्रत्यय
- (ii) → भाववाचक " "
- (iii) → सम्बन्धवाचक " "
- (iv) → ऊनता/हीनता/अधुनावाचक " "
- (v) → अप्रत्यवाचक/सन्तानबोधक " "
- (vi) → स्त्रीबोधक " "

## ① कृत्/कृदन्त प्रत्यय-

जब किसी क्रिया या मूलधातु के साथ प्रत्यय का प्रयोग किया जाये, तो उससे बने वाला यौगिकशब्द, कृत्/कृदन्त प्रत्यय कहलाता है -

जैसे- लिखना - लेख + अक = लेखक, तैरना - तैर + आक = तैराक  
हँसना - हँस + ओड़ = हँसोड़ा, मिलना - मिल + आवट = मिठावर



## ① कर्तृवाचक कृदन्त प्रत्यय-

जब किसी क्रिया या मूलधातु के साथ प्रत्यय का प्रयोग किया जाए और वह कर्ता के अर्थ का बोध कराए, कर्तृवाचक कृदन्त प्रत्यय कहलाता है-

जैसे- पढ़ना- पढ़ + आकू = पढ़ाकू, भड़ना- भड़ + आकू = भड़ाकू  
 घूमना- घूम + अक्कड़ = घुमक्कड़, झड़ना- झड़ + झियल = झड़ियल

झगड़ना - झगड़ + आलू - झगड़ालू

सड़ना - सड़ + इयल = सड़ियल,

मरना - मर + इयल - मरियल,

पीना - पी + अक्कड़ = पियक्कड़

कूदना - कूद + अक्कड़ - कूदक्कड़,

भूलना - भूल + ररा = भुलरा

लिखना - लिख + ररा = लिखेरा,

भागना - भाग + मोड़ा = भगोड़ा

हँसना - हँस + ओड़ा = हँसोड़ा,

टिकना - टिक + रेत = टिकेर

भूलना - भूल + वाला = भूलने वाला,

लिखना - लिख + वाला = लिखने वाला

पालना - पाल + दार = पालनहार,

तारना - तार + दार = तारनहार